

نَسَمَهُ أَوْ نَعَقْلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ فَأَعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ ۝

یا समजते, तो न रहते जहन्नमवालोंमें (१०) तो ठकरार कर लिया उन्होंने अपने गुनाहोंका.

فَسَحَقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ

तो दूर हो जहन्नमवाले (११) बेशक जो उरें अपने रबको बेदृष्टे,

لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَأَسْرُوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ

उनके लिये मग़ि़रत है और बड़ा धवाब (१२) और आछिस्ता करो अपनी बात या जोरसे, बेशक वोह जानने

بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ هُوَ

वाला है सीनोंकी बातकी (१३) क्या वोह न जाने जिसने पैदा इरमाया ? और वोही बारीक भी फबरदार (१४) वोही है

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامشَوْا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن

जिसने कर दिया तुम्हारे लिये जमीनको राम, कि खलो इ़रो उसके रास्तोंमें, और भाओ उसकी

رِمَاقٍ وَالْيَبْرِ النَّشُورُ ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ مَن فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ

रोज़ी, और उसीकी तरफ़ उठना है (१५) क्या निडर हो गये तुम आसमानवालेसे, कि धंसा दे तुम्हें

الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَوْرٌ ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ مَن فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ

जमीनमें, तो उस वक्त वोह थरथराती हो (१६) या निडर हो गये तुम आस्मानवालेसे, कि छोड दे तुम पर

عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ

पथथरोंकी बारिश, तो अब जानोगे कि कैसा था मेरा डराना (१७) और बेशक जुटलाया जो

مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٍ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ قَوْمَهُمْ صَفَّتْ

उनसे पहले थे, तो कैसा हुवा मेरा ठन्कार कर देना (१८) क्या उन्होंने नहीं देखा परिन्दकी अपने ठीपर पर भोले,

وَيَقْبِضْنَ ۝ مَا يَسْكُرُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝

और समेट ली दें... नहीं रोके है उन्हें मगर अल्लाह महदरबान. बेशक वोह हर ओकका निगरां है (१९)

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِن

वोह कौन है जो लशकर हो तुम्हारा, महद करे तुम्हारी अल्लाह रहमानके भिलाइ.

الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ

काइर लोग अस धोकेमें हैं (२०) कौन है वोह जो रोजी दे तुम्हें ? अगर रोक लिया अल्लाहने अपनी रोजीको.

۱۰

وَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرٍ

بَلْ لَّجَوَانِي فِي عُنُقٍ وَنُفُورٍ ۝۱۱ أَفَسِنَّ يَيْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ

બલ્કિ જમે પરે હેં સરકશી ઓર નફરતમેં (૨૧) તો કયા જો ચલે ઓંધા મુંહકે બલ, બડી હિદાયત

أَمَّنَّ يَيْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝۱۲ قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ

વાલા હે, યા વોહ જો ચલે સીધા ? સીધે રાસ્તે પર (૨૨) કેહ દો કિ વોહી હે જિસને પૈદા કિયા તુમ્હેં

وَجَعَلَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝۱۳ قُلْ

ઓર બનાયા તુમ્હારે લિયે કાન, ઓર આંખેં, ઓર દિલ, તુમ કમ શુક્રગુઝાર હોતે હો (૨૩) કેહ દો કિ

هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَالْيَوْمِ تُحْشَرُونَ ۝۱۴ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ

વોહી હે જિસને ફેલા દિયા તુમ્હેં ઝમીનમેં, ઓર ઉસીકી તરફ હશર કિયે જાઓગે (૨૪) ઓર પૂછતે હેં કિ કબ હે

هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝۱۵ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا

યહ વા'દા, અગર સચ્ચે હો (૨૫) જવાબ દો, કિ “યહ બતાના અલ્લાહ હીકા કામ હે. ઓર મેં

أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝۱۶ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ

બસ સાફ સાફ ડર સુનાનેકા ઝિમ્મેદાર હૂં” (૨૬) ફિર જહાં દેખ પાએ ઉસે પાસ, તો બિગડ ગએ ચેહરે ઉનકે, જિન્હોંને કુફ્ર કિયા થા, ઓર

قِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ۝۱۷ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِي

કેહ દિયા ગયા કિ યહ હે જિસકો તુમ લોગ માંગા કરતે થે (૨૭) કહો કિ ઝરા યહ બતાઓ કિ ખ્વાહ હલાક કરદે મુઝે

اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا ۝۱۸ فَمَنْ يُهَيِّئِ الْكُفْرَيْنِ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ۝۱۹

અલ્લાહ ઓર મેરે સાથિયોંકો, ખ્વાહ રહમ ફરમાએ હમ સબ પર, તો વોહ કૌન હે જો પનાહ દે દે કાફિરોંકો દુખવાલે અઝાબસે (૨૮)

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّا بِي وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۝۲۰ فَسْتَعْلَمُونَ ۝۲۱ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ

કેહ દો કિ વોહી મહરબાન હે, હમ માન ગએ ઉસકો, ઓર ઉસી પર ભરોસા રખા.. તો જલ્દ જાન લોગે જો ખુલી ગુમરાહી

مُبِينٍ ۝۲۲ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ قَاعِينَ ۝۲۳

મેં હે (૨૯) પૂછો કિ ઝરા તુમ બતાઓ કિ અગર સુબહકી તુમ્હારે પાનીને કિ ગાઈબ હે, તો કૌન લાએગા તુમ્હારે પાસ બેહતા પાની (૩૦)

سُورَةُ الْقَلَمِ ۲
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

સૂરએ કલમ મકકિયા

નામસે અલ્લાહકે બડા મહરબાન બખ્શનેવાલા

આયાત પર રુકૂઅ ર

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝۱ مَا أَنْتَ بِمُعْجِزٍ لِّرَبِّكَ بِمَجْزُونَ ۝۲ وَإِنْ لَكَ

પૂન, કસમ હે કલમકી, ઓર જો વોહ લિખેં (૧) કિ તુમ નહીં હો અપને રબકે ફઝલસે મજનૂં (૨) ઓર બિલાશુબહ તુમ્હારે

لَا جُرْأَعِيْرَ مَسْنُوْنٍ ۝ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۝ فَسَتَبْصُرُ وَيُبْصِرُونَ ۝

لिये पचाब है भेडद (३) और बिलाशुभड तुम यकीनन भरे भुडक पर डो (४) तो जडद देभोगे, और वोड लोग भी देभ देंगे (५)

بِأَيْتِكُمُ الْمَفْتُونُ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۝ وَ

डि कडसे जूनन डुवा है (६) भेशक तुभडारा रभ, वोड भुभ जानता है जो भडका उसकी राडसे. और

هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ فَلَا تُطْعِمُ الْمَكْدِيْبِيْنَ ۝ وَذُو الْوَتْدِ هُنَّ

वोड भुभ जानता है जो राड पानेवाले हैं (७) तो न माना करना र्धन जुटवानेवालोंकी (८) उन्डोंने आरजू रभी डि अगर थिकनी युपडी करो तुम,

فِيْدٍ هِنُوْنَ ۝ وَلَا تُطْعَمُ كُلَّ حَلَاْفٍ مَّهِيْنٍ ۝ هَمَّازٌ مَّشَاءٌ بِبَنِيُوْ ۝

तो वोड भी थिकनी थिकनी भाते करें (९) और न माना करना कडसी भरे कसम पानेवाले जलीलकी (१०) थोटकी भात करनेवाला युगडी ले

مَّمَّاءٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَيْتِيْمٍ ۝ عَتَلٌ بَعْدَ ذَلِكَ زَيْعِيْمٌ ۝ أَنْ كَانَ

कर र्धर उधर यलनेवाला (११) भैरातसे भडा मना करनेवाला डदसे भड जानेवाला गुनडगार (१२) भद भिज्जज उन सभके भा'द नुडू अेनातडकीक (१३)

ذَامَالٍ وَبَيْنِيْنَ ۝ إِذَا شَتَّىٰ عَلَيْهِ الْاَيْتَانَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝

रस पर डि मालवाला और भेटोंवाला है (१४) जब तिलावत की गर्थ उस पर डमारी आयते, बोला डि अगलोंकी कडानियां हैं (१५)

سَسَمًا عَلَى الْخَرْطُوْمِ ۝ اِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا اَصْحَابَ الْجَنَّةِ اِذَا اَشْمَوْا

जडद डम डग डेंगे उसके थूंथने पर (१६) भेशक डमने आजमाया उन्डें जिस तरड आजमाया था अेक बागवालोंको, डि कसम पार्थ थी

لِيَبْرَ مِنْهَا مُصْبِحِيْنَ ۝ وَلَا يَسْتَنْوْنَ ۝ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفِيْنَ

डि जडर काटेंगे अपने भेतको सुभड डोते (१७) और र्धनशाअड्लाड नडीं डेडते (१८) तो धूम पडा उन पर अेक गार्डिशवाला तुभडारे

رَبِّكَ وَهُمْ نَائِيُوْنَ ۝ فَاصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۝ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۝

रभकी तरकसे और वोड सो रडे हैं (१९) तो सुभडकी भेतीने जैसे कटी डूठ (२०) तो उन्डोंने अेक दूसरेको आवाज दी सुभड करते डूअे (२१)

اِنْ اَعْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صَرِيْمِيْنَ ۝ فَانطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَفَتُوْنَ ۝

डि सवेरे डी यलो अपनी भेतीको अगर काटना याडते डो (२२) तो यल पडे और वोड आडिस्ता आडिस्ता डेड रडे हैं (२३)

اَنْ لَا يَدَّ خُلُقَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِيْنَ ۝ وَعَدَّوْا عَلٰى حَرْدٍ قَدِيْرِيْنَ ۝

डि न धुसने पाअे भेतीमें आज तुम पर कोठ भिरकीन (२४) और सवेरे डी पडोंये अपनी निथ्यते भुडल पर कुडरत वाले भन कर (२५)

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْا اِنَّا لَصَالُوْنَ ۝ بَلْ مَحْنٌ مَّحْرُوْفُوْنَ ۝ قَالَ اَوْسَطُهُمْ

तो जब उन्डोंने देभी भेती, बोले डि बिलाशुभड डम यकीनन भडके डूअे हैं (२६) बडि डम तो मडडम डी हैं (२७) बोला उन्डीका अेक गनीमत आडमी,

أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿۲۸﴾ قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿۲۹﴾

कि क्या नहीं केड दिया था मैं ने तुम्हें, कि तस्बीह क्यूं नहीं किया करते (२८) सब बोले पाकी है हमारे रबकी, बेशक हम थे अंधेरवाले (२९)

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَّبِعُونَ ﴿۳۰﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنْ كُنَّا

तो सामना किया अेकने दूसरेका कि मलामत कर रहे हैं (३०) बोले कि छाये अफसोस हम पर, बेशक हम

طُغْيَيْنَ ﴿۳۱﴾ عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنْ إِلَىٰ رَبِّنَا رِغْبُونَ ﴿۳۲﴾

थे सरकश (३१) करीब है कि हमारा रब बदलेमें दे हमें बेउतर उससे, बेशक हम अपने परवरिदागरकी तरफ रगभत रभनेवाले हैं (३२)

كَذَلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَالْعَذَابُ الْأَخْرَجُ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿۳۳﴾ إِنَّ

ऐसा ही होता है अजाब. और यकीनन आभिरतका अजाब कहीं बडा है.. अगर वोड लोग जानते (३३) बेशक

لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ﴿۳۴﴾ أَفَجَعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿۳۵﴾

अव्लाडसे उरनेवालोंके लिये उनके रबके पास राडतके बाग हैं (३४) तो क्या हम कर देंगे मुसल्मानोंकी मुजरिमोंकी तरफ (३५)

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۗ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿۳۶﴾ إِنْ لَكُمْ

क्या हुवा तुम्हें.. केसी जबरदस्ती करते हो (३६) क्या तुम लोगोंकी भी कोई किताब है जिसे पढते हो (३७) कि तुम्हारा भी कुछ

فِيهِ لِمَا تَحْكُمُونَ ۗ أَمْ لَكُمْ آيَاتٌ عَلَيْنَا بِالْعَمْرِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۗ

उसमें है जिसको तुम पसन्द करो (३८) या तुम लोगोंके लिये हम पर कुछ कसमें हैं क्यामत तक की, कि बिलाशुभड

لَكُمْ لِمَا تَحْكُمُونَ ۗ سَلِّمُوا إِلَيْهِمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ ﴿۳۹﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۗ

तुम्हारा है जो तुम कैसवा करो (३९) पूछो उन लोगोंसे कि कौन उसका जिम्मेदार बनता है (४०) या उनके मा'बूद हैं,

فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿۴०﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَ

तो ले आओं अपने मा'बूदोंको, अगर सच्ये हैं (४१) जिस दिन कि कश्के साक किया जायेगा, और

يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿۴१﴾ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ

बुलाये जायेंगे सजदेकी तरफ, तो न कर सकेंगे (४२) जुकी पडी उनकी आंभें, और छाई जाती है उन्हें

ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ ﴿۴२﴾ قَدَّرْنَا وَقِنَ

रुस्वाई, और बेशक यड बुलाये जाते थे सजदेकी तरफ जबकि तनदुरुस्त हैं (४३) तो रहने दो मुजे, और जो

يُكذِّبُ بِهَذَا الْحَدِيثِ ۗ سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۴३﴾

जुटवाता है इस बातकी. जलद ही हम बातदरीज ले जायेंगे उन्हें जहांसे जान न सकें (४४)

وَأَمَلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿۳۸﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ

ओर हील हूँगा उन्हें. बेशक मेरी पोशीदा तदबीर मजबूत है (४५) क्या तुम उनसे उजरत खाते हो, तो वोह तावानसे

مُتَقَلَّبُونَ ﴿۳۹﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿۴۰﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ

गिरां भार हें (४६) या उनके पास गैब है, तो वोह जनमपत्रा बनाते हें (४७) तो मुन्तज़िर हो अपने रबके हुकमके लिये,

وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿۴۱﴾ لَوْلَا أَنْ تَدْرَكَهُ

ओर न होता भिछलीके वाकिआवालेकी तरह.. जबकि पुकारा ओर वोह गमनाक है (४८) अगर न तदारुक करती उन

نَعْمٌ مِّنْ رَبِّهِمْ لَنِبَذَ بِالْعُرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿۴۲﴾ فَاجْتَبِ رُبِّيْ فَجَعَلَهُ

रबकी तरफसे ने'मत, तो वोह यकीनन हेंक दिये ज़ते यदियल मैदानमें ज़भूंडाल (४९) तो युन लिया उन्हें उनके रबने, तो

مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿۴۳﴾ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ

कर दिया उन्हें लियाकतवालोंसे (५०) ओर वाकेअमें काकिर लोग ज़रूर गिराने लगते हें तुमको अपनी अपनी नज़रे बंदसे,

لَمَّا سِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿۴۴﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿۴۵﴾

जब जब उन्होंने सुना नसीहतको, ओर कहते हें कि बेशक यह मजनुं है.. (५१).. ओर वोह बस नसीहत है सारे ज़लानके लिये (५२)

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ ۶۹
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सूरअे हाक्का मकिक्क्या

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात पर रुकुअ र

الْحَاقَّةُ ﴿۱﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿۲﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿۳﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ

वोह छेनेहीवाली (१) ओर केसी कुएछेवोह छेनेहीवाली (२) ओर क्या तुम समजेकि केसी कुएछेवोह छेनेहीवाली (३) जुटलाया पमूह ओर आदनेउस

بِالْقَارِعَةِ ﴿۴﴾ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأَهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿۵﴾ وَأَمَّا عَادُ فَأَهْلِكُوا

दिल ढिला देनेवाली घडीको (४) तो पमूह तो भरबाद कर दिये गये उदसे बढी चिंघाडसे (५) ओर रहे आद, तो वोह तबाह कर दिये गये

بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿۶﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَتَلْوِيَةً أَيَّامٍ ﴿۷﴾

निहायत तेज आंधीसे (६) मुसल्लत कर दिया उसे उन पर सात रात और आठ दिन.

حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ أَحْمَارٌ تَحْتَ خَاوِيَةٍ ﴿۸﴾

मुतवातिर. तो देभो कोमको उसमें गिराये पछाडे, गोया कि वोह भजूरके गिरे दरफ्तके तने हें (७)

فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ﴿۹﴾ وَجَاءَ قَرَعُونَ ﴿۱۰﴾ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالنُّوَاقِحُ ﴿۱۱﴾

तो क्या देभते हो उनका कोरिं बया हुवा ? (८) ओर ले आया फिरऔन, ओर उसके पडलेवाले, ओर उल्टाई

بِالْحَاطَّةِ ۹ فَعَصُوا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَاخَذَهُمْ أَخَذَةً رَابِيَةً ۱۰ إِنَّا

पट्टाई भस्त्रियों वाले जुर्म (८) युनाच्ये गुनाह किया अपने रबके रसूलका, तो पकडा उन्हें बढी यढी पकड (१०) भेशक

لَسَّاطِعًا الْمَاءِ حَمَلْتُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۱۱ لِتَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذَكَّرَةً

हमने जब बढ यढ गया पानी, सवार कराय़ा था तुम सबको यलती कशतीमें (११) ताकि कर दें हम उसे तुम्हारे लिये यादगार,

وَتَعِيهَا أُذُنٌ وَأَعْيَةٌ ۱۲ فَاذْأَنْفَخَ فِي الصُّورِ نَفْحًا وَاحِدًا ۱۳ وَ

और याद रभें उसे याद रभनेवाले कान (१२) तो जहां झंका गया सूरमें अेक हम (१३) और

مُحَلَّتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۱۴ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ

हैा ली गई जमीन, और पहाड किर रेजारेजा कर दिये गये, हानों अेक ही पटकमें (१४) तो उस दिन वाडेअ हौ गई, वाडेअ

الْوَاقِعَةُ ۱۵ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَرَى يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةً ۱۶ وَالْمَلِكُ عَلَى

हाने ही वाली घडी (१५) और फट गये आस्मान, तो वोह उस दिन बेजोर है (१६) और फिरशते उसके

أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةً ۱۷ يَوْمَئِذٍ

कनारों पर हैं. और हैाअेंगे तुम्हारे रबके अर्शको, अपने ऒपर उस दिन आह फिरशते (१७) उस दिन तुम

تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۱۸ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابًا بِيَمِينٍ

वोग पेश किये जाओगे, न छुप सकेगी तुममेंसे कोई छुपनेवाली हस्ती (१८) तो जो दिया गया उसका नामअे आमाव हारिने हाथमें,

فَيَقُولُ هَٰؤُلَاءِ مِمَّا قُرِئُوا وَكِتَابِي ۱۹ إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْكٌ حِسَابِي ۲۰

तो वोह कहेगा, कि “वो पढे मेरा नामअे आ’माव (१८) भेशक में समजता था कि भेशक में पाँगा अपना हिसाब” (२०)

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۲۱ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۲۲ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۲۳ كُلُوا

तो वोह अपने पसन्दीदा आराममें है (२१) किरहौसे आलीमें (२२) जिसके भोशे करीब ही हैं (२३) कि जाओ

وَأَشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۲۴ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ

और पियो भुश भुश, सिवा उसका जो पढले भेज युके तुम, गुजरे जमानामें (२४) और रहा वोह, जो दिया गया

كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۲۵ فَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لِمَ أُوتِيَ كِتَابِي ۲۶ وَلِمَ أُدْرِمَا

नामअे आ’माव बाअें हाथमें.. तो कहेगा, कि “अै काश न दिया जाता मैं अपना नामअे आ’माव (२५) और न जानता कि कया

حِسَابِي ۲۷ يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۲۸ مَا أَعْنَى عَنِّي مَالِي ۲۹

हिसाब मेरा है (२६) अै काश, वोह भौत हौती हमेशाके लिये (२७) न काम आया मेरे मेरा माव (२८)

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَّةٌ ۱۹ خُدُوهُ فَغُلُوهُ ۲۰ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلْوَهُ ۲۱

جاتی رہی میں سے میری حکومت (۱۹) پکڑو اسے، کھیر تھوک پلٹنا دو اسکو (۲۰) کھیر جہنم میں آؤ گے اسکو (۲۱)

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۲۲ إِنَّهُ كَانَ

کھیر لڑائی، جسکی پیمائش ستر گز ہے، تو اس میں پیرو دو اسکو (۲۲) یہ نہیں مانتا تھا

لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۲۳ وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۲۴

اعجازت والے اللہ کے (۲۳) اور نہیں اُتارتا تھا مسکین کے کھانے پر (۲۴)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَبِيمٌ ۲۵ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۲۶

تو نہیں ہے اسکا آج یہاں کوئی دوست (۲۵) اور نہ کوئی گناہ، مگر لڑائی کی نیوکی پیپ (۲۶)

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۲۷ فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۲۸ وَمَا لَا

نہ کھائے اسے مگر گناہگار (۲۷) تو نہیں کیا میں تو کسم پھاتا ڈھنڈھن بھیڑیوں کی، جسے تم لوگ دیکھتے ہو (۲۸) اور جسے نہیں

تُبْصَرُونَ ۲۹ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۳۰ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۳۱

دیکھتے (۲۹) کی بے شک یہ بات یہی ہے رسالے کے (۳۰) اور نہیں ہے وہ کسی شاعر کی بات۔

قَلِيلًا مَّا تُوَفَّوْنَ ۳۲ وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَّا تَدَّكُرُونَ ۳۳

کچھ کھڑ کم مانا کرتے ہو (۳۲) اور نہ کسی کاہن کی بات۔ کچھ کھڑ کم دھیان کرتے ہو (۳۳)

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۳۴ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۳۵

اسکا اتارنا ہے ربوبی والے عالموں کی (۳۴) اور اگر بنا لیتے ہم پر کوئی بات (۳۵)

لَا خَدَّ نَامِنُهُ بِالْإِيمَانِ ۳۶ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۳۷ فَمَا مِنْكُمْ

تو ہم پکڑ چکے ہوتے اسکو کوی لہجہ سے (۳۶) کھیر یقین کاٹ چکے ہوتے اسکی رگے دھلی کو (۳۷) کھیر نہ ہوتا تم میں

مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حُمْزِينَ ۳۸ وَإِنَّهُ لَتَذْكُرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۳۹ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ

کوئی روک سکنے والا (۳۸) اور بے شک یہ یقین نہ سہل ہے ڈر والوں کے لیے (۳۹) اور بے شک ہم یقین

أَنَّ مِنْكُمْ مُّكذِّبِينَ ۴۰ وَإِنَّ لِحَسْرَةً عَلَي الْكٰفِرِينَ ۴۱ وَإِنَّ لِحَقِّي

جاننے ہوں، کی بے شک تم میں جھوٹانے والے ہیں (۴۰) اور بے شک یقین وہ لڑتے ہیں کہیں (۴۱) اور بے شک وہ لڑ

الْيَقِينِ ۴۲ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۴۳

یقین (۴۲) تو پاکی بولتے رہو اپنے اعجازت والے رب کے نام کی (۴۳)

سُورَةُ الْمَعَارِجِ ٢٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سूरअे मआरिज मकिठ्या

नामसे अल्लाहके बडा मदरबान बभशनेवाला

आयात ४४ रुकूअ २

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝ مِّنَ

मांगा अेक मांगनेवालेने उस अजाबको, जो होने ली वाला है (१) काकिरोको, नही है उसका कोरु डटा सकनेवाला (२) बुलान्दियों

اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ

वाले अल्लाहकी तरफसे (३) कि उरुज करते हैं इरिशते और उरुलअमीन उसकी तरफ उस दिनमें,

مُقَدَّرًا ۝ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝ فَاصْبِرْ صَبِيرًا جَسِيلًا ۝ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ

जिसकी भिकदार पचास डजार साल है (४) तो तुम भुब सभ्रसे कामलो (५) बिलाशुबड वोड समजते हैं

بِعَيْدٍ ۝ وَتَرَاهُ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالرَّهْلِ ۝ وَتَكُونُ الْجِبَالُ

उसको दूर अन्धोनी (६) और डम देभरडे हैं उसको करीब होनेली वाली (७) जिस दिन लोग आस्मान जैसे पिघली चांटी (८) और डोंगे पडाड

كَالْعِهْنِ ۝ وَلَا يَسْأَلُ حَيِّمٌ حَيِّمًا ۝ يُبْصَرُونَ وَنَهُمْ يُودُّ الْمَجْرِمُ ۝ لَوْ

जैसे धुनी डिन (९) और न पूछेगा कोरु दोस्त किसी दोस्तकी (१०) डालांकि वोड लोग बाडम पेशेनजर किये जअेंगे. आरजू

يَقْتَدِي مِنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ بِبَنِيهِ ۝ وَصَاحِبَتُهُ وَأَخِيهِ ۝ وَ

करेगा मुजरिम, कि अगर किदया देदे उस दिनके अजाबसे बयनेको अपने भेटे (११) और भीवी और लार्ठ (१२) और

فَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيِّدُ ۝ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝

अपना कुम्भा, जो ठिकाना देता रडा है उसे (१३) और सारे जमीनवालेको, फिर भी यड किदया देना उसे बयालेगा (१४)

كَلَّا ۚ إِنَّهَا لَظَى ۝ نَزَاعًا لِلشَّوَى ۝ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝ وَ

डरगिज नडी. बेशक वोड लडकती आग है (१५) भाल तक उतार देनेवाली (१६) बुलाती रडती है उसे जिसने पीठ दिभार्ठ थी और मुंड डेरा था (१७) और

جَمَعَ فَأَوْعَى ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝ إِذْ امْسَسُ الشَّرْجُ رُوعًا ۝

जभा जथ्था किया था, और सन्दूकमें रभा था (१८) बेशक ठन्सान पैदा किया गया है बेसब्रा (१९) जब पडोंथी भराभी, तो घबराडटावाला है (२०)

وَإِذْ امْسَسُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ

और जब पडोंथी उसे लबार्ठ, तो रोक रभनेवाला है (२१) मगर नमाजी लोग (२२) जो अपनी नमाज पर डभेशा

دَائِمُونَ ۝ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مِّمَّا لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝

काठम हैं (२३) और जिनके मालोंमें डक मुकररर है मंगताके लिये (२४) और न मांग सकनेवालेके लिये (२५)

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۗ وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ

और जो तस्दीक करें रोजे जजाकी (२६) और जो अपने रबके अजाबसे

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ۗ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۗ وَالَّذِينَ هُمْ

उरनेवाले हैं (२७) भेशक उनके रबका अजाब निःसर होनेकी चीज नहीं (२८) और जो अपनी शर्मगाहों

لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۗ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ

की डिफाजत करनेवाले हैं (२९) मगर अपनी भीबियों पर, या जो उनके दस्ते मिल्कियतमें बाँडियां हैं,

غَيْرُ مُّكْرَمِينَ ۗ فَمَن ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ۗ وَ

कि भेशक वोड मुजरिम नहीं हैं (३०) तो जिसने याडा उसके सिवा, तो वोही उदसे बढ जानेवाले हैं (३१) और

الَّذِينَ هُمْ لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۗ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ

जो अपनी अमानतों और अहदके डिफाजत रफनेवाले हैं (३२) और जो अपनी गवाडियों पर ठीक रहने

قَائِلُونَ ۗ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۗ أُولَٰئِكَ فِي

वाले हैं (३३) और जो अपनी नमाजकी डिफाजत करनेवाले हैं (३४) वोड हैं

جَنَّتْ مُّكْرَمُونَ ۗ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَبَلَّكَ لَهُمْ طِعِينَ ۗ عَنِ

जन्तोंमें, बाँडूजत (३५) तो क्या हुवा काकिरोको, कि तुम्हारी तरफ धूरनेवाले हैं (३६) दाडिने

الْبَحْرِينَ وَعَنِ الشِّمَالِ عَزِينَ ۗ أَيُّطَعُ كُلُّ اأْرِيٍّ فِيمَ أَنْ يُدْخَلَ

और बाअसे, गिरोड दर गिरोड (३७) क्या ललयाता उनका उर शप्स, कि दाभिल किया

جَنَّةَ نَعِيمٍ ۗ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّثْلَ مَا يَعْلَمُونَ ۗ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ

जाअेराडतकेभागमें (३८) उरगिज नहीं भेशक उमनेपैदा करमाया उन्हे उससे जिसे वोड जानते छीं हैं (३९) तो नहीं क्या मैं कसमयाद करता हुंतमाम

وَالْمَغْرِبِ إِنَّا الْقَادِرُونَ ۗ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ

पूरभों और सारे पच्छिमोंके रबकी, कि भेशक उम यकीनन कुदरतवाले हैं (४०) ठस पर कि बदल दें उनसे बेउतर, और नहीं हैं उम

بِمَسْبُوقِينَ ۗ فَذَرَهُمْ مَخُوضًا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي

आजिज (४१) तो छोडो उन्हे कि बेहुदगीमें पडे रहें और भेला करें यहाँ तक कि मिलें अपने उस दिनको,

يُوعَدُونَ ۗ يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصَبٍ

जिसाक वा'दा दिये गये हैं (४२) जिस दिन निकलेंगे कब्रोंसे ळपटते हुअे, गोया वोड अपने अपने किसी निशान

يُوفُونَ ۳۳ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ

तक दौड लगा रहे हों (४३) लुकी लुकी उनकी आंभें, छाई उन पर ज़िद्वत. यह है वोड दिन जिसका

الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۳۴

वा'दा दिये जाने थे (४४)

سُورَةُ نُوْرٍ ۷۱

सूरअे नूड मक्किय्या

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात २८ रुकूअ २

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ

बेशक भेजा हमने नूडको उनकी कौमकी तरफ़, कि उर सुना दो अपनी कौमको, कबल ईसके कि आये उनके पास

عَذَابٍ أَلِيمٍ ۱ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي كُنْتُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۲ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ

दुभवाला अजाब (१) उन्होंने कडा कि अै मेरी कौम! बिदाशुबड में तुम्हारे लिये भुवा भुवा उर सुना देने वाला हूँ (२) कि पूजो अल्लाहकी

وَأَتَّقُوا وَأَطِيعُوا ۳ يَعْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ

और उरो उसे, और कडा मानो मेरा (३) बप्श देगा तुम्हारे गुनाहोंको, और मोडलत देगा तुम्हें अेक मुकरर

قَسِيٍّ ۴ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۵ قَالَ رَبِّ

मुदत तक. बिदाशुबड अल्लाहकी मुकररकई वक्त, जब आ गया तो नहीं उटाया जाता.. अगर तुम जानते होते (४) हुआ की, कि "परवरदिगारा

إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۶ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۷ وَ

बिदाशुबड में ने तो भुवाया अपनी कौमको रात दिन (५) तो नहीं बढा उनमें मेरे भुवानेसे, मगर भागते रहना (६) और

إِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَعْشَوْا

बेशक जब जब मैंने भुवाया उन्हें, कि तू बप्श दे उन्हें, तो देते रहे अपनी उंगलियां अपने कानोंमें, और ओढ लिये

ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا وَاسْتَكْبَرُوا ۸ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهْرًا ۹

अपने कपडे, और ज़िद करते रहे, और बडे बनते रहे बेहद (७) फिर बेशक मैंने भुवाया उन्हें भुलन्द आवाजसे (८)

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۱۰ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ

फिर बेशक मैंने अेलानिया भुवाया उन्हें, और भुकिया भातें ली की उनसे भुब (९) युनान्चे मैंने कडा कि मक्किरत मांगो अपने रबकी.

إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۱۱ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۱۲ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَقْوَالٍ

बेशक वोड मक्किरतवाला है (१०) भरसाअेगा विपरसे तुम पर मूसलाधार बारिश (११) और बढाअेगा तुम्हें माल

وَبَيْنَ وَبَيْنَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَنَّتٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهْرًا ۖ قَالَ لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ

और बेदोमें, और बना देगा तुम्हारे लिये बाग, और कर देगा तुम्हारे लिये नहरें (१२) क्या हुआ तुम्हें कि उम्मीदवारी नहीं करते अल्लाहसे वकार

وَقَارًا ۖ وَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ أَطْوَارًا ۗ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ

की (१३) छायांकि बेशक उसने पैदा करमाया तुम्हें दंग दंगके (१४) क्या तुम लोगोंने न देया, कि कैसे पैदा करमाया अल्लाहने सात आस्मानों

طَبَاقًا ۖ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۗ وَاللَّهُ أَنْبَأَكُمْ

को नीचे ठीपर (१५) और बनाया चांदको उनमें रोशन, और बनाया सूरजको यराग (१६) और अल्लाहने उगाया

مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۗ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۗ وَاللَّهُ

तुम्हारे लिये जमीनसे सब्जा (१७) फिर दोबारा ले जायेगा तुम लोगोंको उसमें, और निकावेगा तुम्हें दोबारा (१८) और अल्लाह

جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ سَاطًا ۗ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَا جَا ۖ قَالَ نُوحٌ

ने कर दिया तुम्हारे लिये जमीनको बिस्तर (१९) ताकि यलो किरो उसके कुशादा रास्तोंमें (२०) अर्ज किया नूहने

رَبِّ ائْتَهُمْ عَصَوْتِي وَاتَّبِعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ۖ

कि “परवरदिगारा बिलाशुभल धन लोगोंने गुनाह किया मेरा, और यले उसके पीछे कि नहीं बढ़ाया जिसके माल व औलादने, मगर भ्रष्टाराके (२१)

وَمَكْرُوا مَكْرَ الْكِبَارِ ۗ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا

और खालभाजी करते रहे वोह अजी सप्त (२२) और केहते रहे कि मत छोडना अपने मा'बूहोंको, और मत छोडना वद, और न

سُوءَاءَ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۗ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۗ وَلَا تَزِدِ

सुवाअ.. न यगूष व यलिक, व नस्र नामोंके बुतोंको (२३) और बेशक उन्होंने भेराह किया बहतोंको”.. और नहीं बढ़ाते

الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۗ مَّا خَطِيئَتُهُمْ أُعْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا ۗ فَكَمْ

अंधेरवाले मगर भेराहीको (२४) अपनी कैसी भताओंके सबभ, वोह लोग डिओ दिये गये, फिर दाबिल किये गये आगमें.. तो

يَمِدُّوهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۗ وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي

न पाया अपना अल्लाहके बिलाइ मददगारोंको (२५) और हुआकी नूहने, कि “परवरदिगारा न छोड

الْأَرْضِ مِنَ الْكُفْرِينَ دِيَارًا ۗ إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ

जमीन पर ककिरोंसे कोठ भसनेवाला (२६) बेशक तूने अगर छोड रभा उन्हें, तो भेराह रभेंगे तेरे सब

وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فِجَارًا كَفَّارًا ۗ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ

बन्होंको, और न जनेगे मगर भदकार नाशुके” (२७) परवरदिगारा भग्श दे मुझे और मेरे मां-बापको और उसे, जो दाबिल हुआ

٢٨
الجن

بَيْتِي مُؤْمِنًا وَ لِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

मेरे घरमें मानता हुआ, और मुसलमान मर्दाँ और औरतोंको. और मत बढ़ा ईन अधेरवालोंमें मगर बरबादी” (२८)

سورة الجن ٢٨
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सूरओ जिन मकिथ्या

नामसे अल्लाहके बडा महदरभान बअशनेवाला

आयात २८ रुकूअ २

قُلْ أَوْحَىٰ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا

केड दो कि वही लेख गई हे मेरी तरफ, कि बिलाशुभल यड वाकेआ हुआ, कि भुभ सुना यन्द जिनोने, तो बोले कि बेशक हमने सुना नादिर

عَجَبًا ۖ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَامْتَابُوا ۖ وَلَكِن نُّشْرِكُ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝

कुरआन (१) जो राड देता हे डिदायतकी तरफ, लिडाजा मान विधा हमने उसको, और डरगिज न शरीक बनाअगे अपने रबका किसीको (२)

وَ أَنَّهُ تَعَلَّىٰ جَدًّا رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۖ وَأَنَّهُ كَانَ

और बेशक वाकेआ हे कि भुलन्द व बावा हे हमारे रबकी शान, उसने नही रभा कोई भीभी और न औलाद (३) और बेशक बका

يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۖ وَأَنَا كَذِبًا أَتَن قَوْلِ

करते थे हममेंके भेवकूफ, अल्लाह पर जूट (४) और बेशक हम समजे थे कि न बोलेगे

الْإِنْسِ وَالْجِنِّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ

ईन्सान और जिन, अल्लाह पर जूट बोली (५) और बेशक कुछ मर्द आदमी थे,

يَعُودُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۖ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا

कि पनाह लेते थे कुछ जिन मर्दोंकी, तो बढ़ा दी उनकी डींग (६) और उनोंने समज रभा था जैसे

ظَنَنْتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۖ وَأَنَّا لَنَسْتَأْ سَمَاءَ فَوَجَدْنَا

कि तुम लोगोंने समज रभा हे, कि डरगिज न भेजेगा अल्लाह किसी नबीको (७) और बिलाशुभल हमने छुवा आस्मानको, तो पाया हमने उसे कि

مِلَّةً حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۖ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ

भर दिया गया हे सप्त पडरों और शो'लोंसे (८) और बेशक हम भेडा करते थे वहां जाबज

لِلسَّمْعِ ۖ فَمَنْ يَسْتَمِعِ الْآنَ يَحْدِثْ لَكَ شَهَابًا مِّمَّا ۖ وَأَنَّا لَا تَدْرِي

सुननेको. तो अब जो सुनना याहे, पायेगा अपने लिये शो'लाको घातमें (९) और बेशक हम नही कयास कर सकते

أَشْرُّ أَرِيْدٍ بِنَّ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۖ وَأَنَّا مِمَّا

कि आया भुराईका ईरादा किया गया हे जमीनवालोंसे, या ईरादा इरमाया हे उनके उनके रबने भलाईका (१०) और बेशक

الضُّلُحُونَ وَمِمَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا طَرِيقَ قَدَادٍ ۝ وَأَنَا ظَنُّنَا أَنَّ

उममें बा'ज नेक हें, और बा'ज उनके भिलाफ हें, उम अलग अलग राह रहे (११) और बेशक उमने समज लिया कि उम

لَنْ نُعْجَزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَا لِنَسْمِعَنَّ

उरगिज नहीं बेकाबू कर सकते अल्लाहको, जमीनमें कहीं, और न बेकाबू कर सकते हें उसे भाग कर (१२) और बेशक जब सुन लिया उमने

الْهُدَىٰ أَمَّا بِهِ ۝ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝

छिदायतको, तो मान गये उसको. कि जो मानेगा अपने रबको, तो न डरेगा किसी कमीको, न बेशकी (१३)

وَأَنَا مِمَّا السَّالِمُونَ وَمِمَّا الْقَاسِطُونَ ۝ فَمَنْ أَسَّأَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا

और बेशक उममें कुछ मुसल्मान हें और कुछ जालिम हें, तो जिसने ईस्लाम कबूल किया, तो उनहींने मकसूद

رَشْدًا ۝ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَأَنْ تَوَسَّقُوا

बनाया छिदायतको (१४) और रहे जालिम, तो वोड हूअे जहन्नमके ईंधन (१५) और यह भी वही की गई है, कि अगर

عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقِيَنَّهُمْ مَاءً غَدَقًا ۝ لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۝ وَمَنْ

दोग सीधे चलते राह पर, तो यकीनन उम सैराब करते उनहीं पानीसे बाहुरात (१६) ताकि आजमाअें उनहीं ईस बारमें. और जो

يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسْجِدَ

मुंड इरे अपने रबके जिकसे, तो घसीटेगा उसे बढने यदनेवाले अजाबमें (१७) और बेशक मस्जिदें

لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ

अल्लाहके लिये हें, तो मत दुहाई दो अल्लाहके साथ किसी ओर मा'बूदकी (१८) और बेशक जब भडा हुवा अल्लाहका भन्दा, कि मा'बूदकी

كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ

दुहाई दे, तो छो जाने लगे उस पर भीड (१९) केड दो कि में दुहाई देता हूँ उस अपने रब हीकी, और नहीं शरीक

أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَنْ

बनाता उसका किसीको (२०) केड दो, कि "में भुद मुन्तार नहीं हूँ तुम्हारे किसी भुरेक, और न भलेका" (२१) केड दो, कि "बेशक नहीं भया सकता

يُجِيرُنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۝ وَلَنْ آجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ إِلَّا

मुझे अल्लाहसे कोई दूसरा.. और उरगिज न पा सकता उसके भिलाफ कोई पनाह गाड (२२) सिवा

بَلَاغٍ مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۝ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ

अल्लाहकी पैगम्बरी और रिसालतोंके." और जो गुनाह करे अल्लाह और उसके रसूलका, तो भिलाशुभल उसके

تَارَجَهُمْ خُلْدِيْنَ فِيهَا اَبَدًا ۗ حَتَّىٰ اِذَا سَاوَا مَا يُوعَدُوْنَ

लिये जल्दन्मकी आग है, हमेशा हमेशा रहनेवाले उसमें (२३) यहाँ तक कि जब देव पाये जिसका वा'दा दिये जाते हैं,

فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقْلُ عَدَدًا ۗ قُلْ اِنْ اَدْرِيْ

अब जल्द जान लेंगे, कि कौन कमजोर रभता है महदगार, और कम भी शुमारमें (२४) केह दो, “में अटकलसे नहीं

اَقْرَبُكَ مَا تُوعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْ اَمَدًا ۗ عَلِمُ الْغَيْبِ

केह सकता, कि करीब है जो वा'दा दिये जाते हो, या कर देगा उसको मेरा रभ दराज” (२५) और वोह गैबका जाननेवाला है,

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖ اَحَدًا ۗ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰ مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

तो नहीं मुकम्मल आगाही देता गैब पर किसको (२६) मगर जिसे युन लिया रसूलसे, कि बिवाशुबल वोह

يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَّمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۗ لِيَعْلَمَ اَنْ قَدْ

लगा देता है रसूलके आगे पीछे पडरा (२७) ताकि बता दे कि उन्हींने

اَبْلَغُوْا رَسُوْلِيْ رِيْهٖمُ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۗ

पलोंया दिया अपने रभके पैगामको, और घेर लिया जो कुछ उनके पास है, और शुमार कर लिया हर चीजको गिनतीमें (२८)

۴۷

سُوْرَةُ الْمَزْمَلِ ۷۲
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
سُوْرَةُ الْمَزْمَلِ ۷۲

सूरअे मुज़म्मिल मकिक्किया

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात २० रुकूअ २

يَا أَيُّهَا الْمَرْمَلُ ۗ قَوْمِ الْبَيْلِ ۗ اِلَّا قَلِيْلًا ۗ رَّصَفَةٌ اَوْ اَنْفَصُ مِنْهُ

अै यादरकी जुरमुट मारनेवाले (१) जागो रातको छंभादतमें, मगर कुछ छिस्सा (२) आधी रात या उससे कम

قَلِيْلًا ۗ اَوْ رَدَّ عَلَيْهِ وَرَتَّلَ الْقُرْآنَ تَرْتِيْلًا ۗ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ

कर दो (३) या बढा दो उस पर कुछ, और कुरआनको पढो छर छर कर (४) बेशक हम अब उतारेंगे तुम पर

قَوْلًا تَقِيْلًا ۗ اِنَّ نَاشِئَةَ الْبَيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطَأًا وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۗ اِنَّ

गिरां वज़्न बात (५) बेशक रातका उठना, यल जयादा है नफस पर दभाव डालनेको, और बछोत ठीक है कुछ बोलनेको (६) बेशक

لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۗ وَاذْكُرْ اِسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْ رَبِّيْلًا ۗ

तुम्हारे लिये दिनमें भोडतरे काम हैं (७) और अपने रभके नामका जिक करो, और उसीके हो रहो, सभसे अलग हो कर (८)

رَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۗ وَاَصْبِرْ

मशिक व मगरिबका रभ, नहीं है कोई मा'बूद उसके सिवा, तो बनाअे रहो उसीको कारसाज (९) और सभ्र करो उस पर,

عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَسِيلًا ۝۱۰ وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ

જો લોગ બક દેતે હેં, ઓર અભી છોડે રહો ઉન્હેં ખુબ સૂરતીસે (૧૦) ઓર રહને દો મુઝે, ઓર ઉન ગુટલાનેવાલે

أُولَى النَّعْتَةِ وَمَقَلَّهُمْ قَبِيلًا ۝۱۱ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِييًا ۝۱۲

સરમાયાદારોંકો, ઓર મોહલત દે દો ઉન્હેં ઝરાસી (૧૧) બેશક હમારે પાસ ભારી ભારી બેડિયાં ઓર ભડકતી આગ હેં (૧૨) ઓર

طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝۱۳ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ

ગિઝા અટકનેવાલી, ઓર દુખવાલા અઝાબ (૧૩) જિસ દિન કિ કાંપ પડેગી ઝમીન ઓર પહાડ,

وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝۱۴ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا مِّمَّنْ هَدَىٰ

ઓર હો ગએ પહાડ રેતકે બહતે ટીલે (૧૪) બેશક હમને ભેજા તુમ લોગોંકી તરફ રસૂલકો.. ચશ્મદીદ ગવાહ

عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝۱۵ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ

તુમ પર. જિસ તરહ કિ ભેજા થા હમને ફિરઓનકી તરફ રસૂલકો (૧૫) તો ગુનાહ કિયા ફિરઓનને અપને રસૂલકો,

فَاخَذْنَاهُ أَخَذًا وَبَيْلًا ۝۱۶ فَكَيْفَ تَكْفُرُونَ إِن كُفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ

તો પકડા હમને ઉસે વબાલવાલી પકડ (૧૬) તો કેસે બયોગે તુમ લોગ અગર કુફરમેં રહ ગએ ઉસ દિન ? જો કર દેગા

الْوِلْدَانَ إِن شِئِبَابًا ۝۱۷ السَّمَاءُ مُنْقَطِرٌ بِهِ ۝۱۸ كَانَ وَعَدُهُ مَفْعُولًا ۝۱۹

બચ્ચોંકો બૂઠા (૧૭) આસ્માન તો ફટ જાનેવાલા હેં ઉસસે, ઉસકા વા'દા કિયા ધરા હી હેં (૧૮) બેશક

هَذِهِ تَذَكُّرٌ ۝۱۹ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝۲۰ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ

યહ નસીહત હેં. તો જિસને ચાહા બના લિયા અપને રબકી તરફ રાસ્તા (૧૯) બેશક તુમ્હારા રબ જાનતા હેં

أَنَّكَ تَقَوْمٌ آدُنِي مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ

કિ તુમ શબબેદારી કરતે હો, કરીબ દો તિહાઈ રાતકે, ઓર આધીરાત તક, ઓર એક તિહાઈ રાત તક, ઓર વોહ જમાઅત

الَّذِينَ مَعَكَ ۝۲۱ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝۲۲ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ

જો તુમ્હારે સાથી હેં. ઓર અલ્લાહ અન્દાજા ફરમાતા હેં રાત ઓર દિનકા. ઉસે મા'લૂમ હેં કિ તુમ લોગ નહીં શુમાર કર સકોગે,

فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَأُوا مَا تيسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۝۲۳ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ

તો કરમ ફરમાયા તુમ પર, અબ પઠ લિયા કરો જો આસાન હો કુરઆનસે. ઉસે મા'લૂમ હેં કિ અનકરીબ હોંગે

مِنْكُمْ مَّرْضَىٰ ۝۲۴ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ

તુમમેંસે કુછ બીમાર. ઓર કુછ લોગ સફર કરેંગે ઝમીનમેં, તલાશ કરેંગે

فَضَّلِ اللّٰهَ ۚ وَآخِرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ

अल्लाहकी इज्जत और कुछ लोग ज़िंदाग करेगे अल्लाहकी राहमें. अब पढ लिया करो जो आसान हो

مِنْهُ ۚ وَاقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَاقْرَءُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۙ

कुरआनसे. और पाबन्दी करो नमाज़की, और देते रहो ज़कातकी, और द्रो अल्लाहको कर्जे उतसना.

وَمَا تَقْدِرُ مَوَالِئِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَوْ

और जो आगे लेज दोगे अपने ललेको कोई लललार्थ, तो पाओगे उसे अल्लाहके यहाँ बेहततर और

عَظَمَ اجْرًا ۙ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۙ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ

बडोत बडो, धवलबमें. और मांगते रहो बपिशिश अल्लाहसे. बेशक अल्लाह गङ्गुररुडीम है (२०)

سُوْرَةُ السُّبْحٰنِ ۙ ۷۳ ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ ۵۴ ۙ

सूरअे मुदबि़र मकिक्क्या

नामसे अल्लाहके बडो महरबान बपशनेवलल

आयात ५६ रुकुअ २

يٰۤاَيُّهَا الْمَدِيْنَةُ ۙ قُمْ فَاَنْذِرِي ۙ وَرَبِّكَ فَكَبِيْرٌ ۙ وَنَبِيَّاۙ بِكَ فَظَهَرٌ ۙ وَ

ऐ यादर ओढनेवलले (१) भडे हो जओकिर डर सुना द्रो (२) और अपने रबकी बडोई भोलो (३) और अपने कपडोंको पाक ली रभो (४) और

الرُّجْرَفَا هَجْرٌ ۙ وَلَا تَمْنُنَ تَسْتَكْبِرُ ۙ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرُ ۙ فَاِذَا اُنْقَرِنِ

भुतको तो बिलकुल छोडे रभो (५) और ँस लिये ऐहसान न करो कि बदला ज़्यादा यालो (६) और अपने रब ली पर जभे रहो (७) कि जहां ईक

التَّائُوْرِ ۙ فَاِذْ لِكَ يَوْمِۤئِذٍ عَسِيْرٌ ۙ عَلٰى الْكٰفِرِيْنَ غِيْرٌ يَّسِيْرٌ ۙ

गया सूरमें (८) तो वोड दिन दुश्वार दिन है (९) काकिरों पर आसान नही है (१०)

ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۙ وَجَعَلْتُ لَهٗ مَا لَا مَسْدُ وُدًّا ۙ وَ

रहने द्रो मुजे और जिसे पैदा किया मैंने अकेला (११) और दिया मैंने उसे लम्बा यौडा सरमाया (१२) और

بَيْنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ وَوَهَّدْتُ لَهٗ تَهْمِيْدًا ۙ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَرْيَدَ ۙ كَلَّا ۙ

छाजिर बाश भेटे (१३) और सामान दिया उसे भुब (१४) किर भी ललयाता है कि मैं और भी दू (१५) डरगिज नही.

اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۙ سَاۤرِهٰۙ صَعُوْدًا ۙ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۙ

बेशक यड लभारी आयतोंका मुभाविक है (१६) जक ली यद्वर्तिका उसे सौद नामके जडनभी पाडा पर (१७) बेशक उसने सोचा और अन्दाज़ लगाया (१८)

فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ ثُمَّ قَاتَلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ ثُمَّ نَظَرَ ۙ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۙ

तो गारत किया जअे केसा अन्दाज़ लगाया (१९) किर गारत किया जअे केसा अन्दाज़ लगाया (२०) किर निगाड डली (२१) किर तेरी यद्वली और मुंडु बिगाडा (२२)

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۖ فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتُونَ إِنْ هَذَا إِلَّا قَوْلُ

کیر پیاٹ دیاہا اور بڑا بنا (۲۳) کیر ہوا، کی “یہ بس جادو ہے کی نہ کھلی جاتی ہے (۲۴) یہ نہیں ہے مگر ہشکر کی

الْبَشَرِ ۖ سَأَصْلِيهِ سَقَرٌ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ۖ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ۖ لَوَاحٍ

کلام” (۲۵) جھکے کھڑے ہیں وہ جہنم میں (۲۶) اور تم نے کیا اڑکھ لگایا کی کیا ہے جہنم (۲۷) نہ باکی رہے اور نہ ڈھے (۲۸) لکھا ہے

لِلْبَشَرِ ۗ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۗ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۗ وَ

والی بھڑکے (۲۹) اس پر مکرر ہے (۳۰) اور نہیں مکرر کیا ہمنے جہنم کے دروے، مگر فرشتوں کی۔ اور

مَا جَعَلْنَا عَدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَالْيَسْتَبِقِينَ الَّذِينَ أَوْتُوا

نہی کر دیا ہے ان کے شمار کو، مگر آجماہش ان کے لیے جہنم کے کھڑے کیا، تاکہ یہ نہ کر لیں جہنم کی گئی ہے

الْكِتَابَ وَيَزِدَّ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

کتاب، اور کئی ہے جو ایمان لیا ہے ان کے ایمان، اور شک نہ کر سکتے ہوں جو دیتے ہیں ان کے ایمان،

وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ وَيَقُولُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا

اور مسلمان۔ اور تاکہ بکا کرے ہوں جن کے دلوں میں بیماری ہے، اور کافر لوگ، کی کیا مہشا ہے

أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن

اٹھا لگا ہے اسے اچھے بات سے۔ اسی طرح ہرا لے رہتا ہے اٹھا لگا، جسے چاہے۔ اور راہ دے ہے جسے

يَشَاءُ ۗ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۗ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ ۗ كَلَّا وَ

چاہے۔ اور نہیں بتا سکتا تمہارے رب کے لکھنے کو سوا اس کے۔ اور نہیں ہے ہوں، مگر نہ سہت ہشکر کے لیے (۳۱) نہیں کیا کسم

الْقَمَرِ ۗ وَاللَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ ۗ وَالصُّبْحِ إِذَا أَصْفَرُ ۗ إِنَّهَا لَإِحدى الْكُبَرِ ۗ

ہے چاند کی (۳۲) اور رات کی جب پیاٹ ہے (۳۳) اور سونے کی جب شہنہ ہے (۳۴) ہشکر جہنم کی چوٹی کی ہے (۳۵)

نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ۗ لَسَنَ نَسْأَلُكُمْ أَنْ يَتَّقَدَّ مَأْوِيَّتَا خَرُ ۗ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا

ڈراہنی ہشکر کے لیے (۳۶) جس نے چاہا تمہیں سے کی آگے بٹ جائے یا پھیلا پڑا رہے (۳۷) ہر جان جو کھڑے کماہا اس

كَسَبَتْ رَهِيئَةً ۗ إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۗ فِي جَدَّتْ يَتَسَاءَلُونَ ۗ

میں گرو ہے (۳۸) مگر ڈالنے ڈاٹھا لے (۳۹) باہوں میں ہے.. دہریا کرتے (۴۰)

عَنِ الْمَجْرِمِينَ ۗ مَا سَدَّكُمْ فِي سَقَرٍ ۗ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصْلُومِينَ ۗ

موجروں سے (۴۱) کی “کیا یہ لے گئی تمہیں جہنم میں?” (۴۲) انہوں نے جواہ دیا، کی “ہم نہ تھے نہ مایوسوں سے (۴۳)

وَلَمْ تَكُ نَاطِعًا لِلطَّغْيَةِ الْوَالِدِينَ ۝ وَكُنَّا نَحْوُ مَعَ الْخَائِيضِينَ ۝ وَكُنَّا

और नहीं बिलाया करते थे भिस्कीनकी (४४) और बेहूदा बहपें करते थे, बेहूदा गोयोंके साथ साथ (४५) और

نُكِّدُ بِبُيُومِ الدِّينِ ۝ حَتَّىٰ آتَيْنَا الْبَاقِينَ ۝ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ

हम जुटलाया करते थे रोजे जलाओ (४६) यहाँ तक कि आ गँह में मौत” (४७) अब न झंझटा देगी उन्हें शक़ाअत करनेवालों

الشُّفَعَاءِ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۝ كَانَتْ هُمْ مَرْتَفِعَةً ۝

की शक़ाअत (४८) तो उन्हें क्या है कि नसीहतसे रूगर्दानी करनेवाले हैं (४९) गोया कि वोह लडके हूँ गधे हैं (५०)

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝ بَلْ يَرِيدُ كُلُّ اٰمِرٍ مِنْهُمْ اَنْ يُوْتِيَ صٰحِفًا

भागें हैं शेरसे (५१) बल्कि याहता है उर शप्स उनका, कि दिये जाते अलग अलग

مُنشَرَةً ۝ كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْاٰخِرَةَ ۝ كَلَّا اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ

सहीके (५२) उरगिज नहीं. बल्कि वोह उरते ही नहीं आभिरतको (५२) नहीं क्या बिलाशुभलड यल नसीहत है (५४) तो जिसने

سَاءَ ذِكْرُهُ ۝ وَمَا يَذْكُرُونَ اِلَّا اَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ ۝ هُوَ اَهْلٌ

याहा नसीहत वी उससे (५५) और नहीं नसीहत हासिल करते, मगर यल कि अल्लाह याहे. वोही उरने

التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

के लार्क, और मफ़िरतवाला है (५६)

الْقِيَامَةِ

سُورَةُ الْقِيَامَةِ ۷۵ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

सूरअे कियामत मकिकय्या

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात ४० रुकूअ २

لَا اُقْسِمُ بِبُيُومِ الْقِيَامَةِ ۝ وَلَا اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللّٰوَامَةِ ۝ اَيْحَسِبُ

नहीं क्या मैं कसम याद करता हूँ कियामतके दिनकी (१) और कसम है उस जानकी, जो अपनी बेहद मलामत करती रहती है (२) क्या समझ रहा

الْاِنْسَانُ اَلَنْ نَجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى قٰدِرِیْنَ عَلٰى اَنْ نُّسَوِّیَ

है इन्सानने, कि हम न जमा कर सकेंगे उसकी हड्डियां (३) क्यूं नहीं, हम कुदरतवाले हैं उस पर कि ठीक कर दें

بِنَاتِهٖ ۝ بَلْ يَرِیْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝ یَسْئَلُ اَيَّانَ یَوْمٍ

उसके पोर पोर (४) बल्कि इन्सान याहता है कि बही करता रहे उसके आगे (५) कि पूछता है कि कब है

الْقِيَامَةِ ۝ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَ

कियामतका दिन (६) तो जब आंभ योंधिया पडी (७) और गडनमें पडा यांद (८) और मिला दिया गया सूरज, और

الذِّكْرَ وَالْآثَاتِي ۱۹ ۱۰ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَيَّ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَى ۱۰

मर्त व ओरत (उत्) क्या नहीं है ऐसा भाविक कुदरतवाला उस पर, कि जिन्दा कर दे मुर्दाको ? (४०)

سُورَةُ الدَّهْرِ ۷۹
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सूरअे दहर मदनिय्या

नामसे अल्लाहके भडा महरमान भणशनेवाला

आयात ३१ रुकूअ २

هَلْ آتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ۱

बेशक आ युका ई-सान पर ऐसा वक्त भी जमानेमें, कि न था कुछ काबिले तजक़िरा (१) बेशक

خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيَهُ ۖ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۲

हमने पैदा इरमाया ई-सानको मिले जूले कतरेसे, कि आजमाअे उसे, तो बना दिया हमने उसे सुननेवाला देखनेवाला (२)

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ ۖ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۳ ۱ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ

बेशक हमने डिदायतकी उसे रास्तेकी, कि या शुक्गुजार और या नाशुका (३) बेशक हमने तैयार कर रभा है काफ़िरोके लिये

سَلْسِلًا وَأَعْلًا ۖ وَسَعِيرًا ۴ ۱ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَشَرُوفُونَ ۫ مِنْ كَافِرِينَ ۫ كَانُوا

जञ्चरें और तौक, और लडकती आग (४) बेशक अबरारका तबका, यह लोग पियेंगे उस ज़ामसे, जिसमें

فَرَجَهَا كَافُورًا ۫ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۫ يُؤْفُونَ

आमेजिश काइरकी है (५) अक यशमा है पीते रहेंगे उसमें अल्लाहके बन्दे, बडाकर ले ज़अंगे अपने यहाँ (६) वोह

بِالنَّدْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَتْ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۫ وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ

पूरी करें मन्तको, और उरते रहें उस दिनको, जिसकी तभाडी कैल ज़ानेवाली है (७) और भाना भिलाअे

عَلَىٰ حَبِّ مَسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۫ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ

उसकी मडबहत पर, मिरकीन और यतीम और कैदीको (८) कि हम भिलाते हैं तुम्हें बस अल्लाह लीके लिये, हम नहीं चाहते

مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۫ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۫

तुमसे कोई मुआवज़ा, और न शुक्गुजारीको (९) बेशक हम उरते हैं अपने रबसे उस दिनको, कि तलब और निदायत सप्त है (१०)

فَوْقَهُمُ اللَّهُ شَرُّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّهْمُ نَصْرًا ۫ وَسُرُورًا ۫ وَجَزَاهُمْ بِمَا

तो भया लिया उन्हें अल्लाहने उस दिनकी भराभीसे, और अताकी उन्हें तरोताजगी और भुशी (११) और भवाभ दिया उन्हें जो

صَبَرُوا ۫ وَاجْتَنَبُوا ۫ وَحَرِيرًا ۫ مُتَّكِينَ ۫ فِيهَا عَلَى الْأَرْيَافِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا

उन्होंने सभ्र किया था, जन्त और रेशमी लिलासका (१२) तकिया लगाअे उसमें तप्तों पर. न देखेंगे उसमें धूप,

شَسَاءٌ وَلَا زَمَهْرِيْرًا ۱۷ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلْمًا وَذُلًّا لَّتْ تَطُوْفُهَا

और न कसकसाती ठंड (१३) और जुके डूबे उन पर उसके साथे, और नीचे कर दिये गये उसके

تَدْلِيْلًا ۱۸ وَيَطَافُ عَلَيْهِمْ بِأَنِيَّةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرًا ۱۹

भोशे बिल्कुल (१४) और दौर यलाया ज़ायेगा उन पर यांटीके भरतनका, और ज़ामोंका, कि होंगे शीशे (१५)

قَوَارِيْرًا مِّنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيْرًا ۲۰ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَأْسًا كَانِ

शीशे भी यांटीके, जिसका अन्दाजा कर लिया उन्होंने पुब (१६) और पिलाये ज़ायेगे उसमें ज़ाम, जिसमें

مَزَاجُهَا زَمْجَبِيْلًا ۲۱ عَيْنًا فِيْهَا تُسْقَى سَلْسَبِيْلًا ۲۲ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ

आमेज़िश है अदरककी (१७) यश्मा है उसी जन्नतमें, जिसका नाम रभा गया सक्सबील (१८) और दौर यलायेगे उन पर

وَلَدَانٌ مُّخْلَدُونَ ۲۳ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّثْنُورًا ۲۴ وَإِذَا رَأَيْتَ

लडके, जो डभेशा रडनेवाले हैं. जहां तुमने देया उन्हें, समझे उनको कि मोती हैं बिभरे डूबे (१९) और जहां देया तुम

تَهُمْ رَأَيْتَ نَعِيْمًا وَمَلَكًا كَبِيْرًا ۲۵ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ ۲۶

ने वहां, तो देया आराम और बडे मुल्कको (२०) उनके बदन पर हैं सल्ल रेशमके कपडे, और दबील रेशम

وَحُلُوًّا أَسْوَدَ مِّنْ فِضَّةٍ وَسَقَمَهُمْ رُبُّهُمُ شَرَابًا طَهُورًا ۲۷ إِنَّ هَذَا

और पडनाये गये हैं कंगन यांटीके. और पिलाया उनको उनके रबने पाक साफ़ शराब (२१) भेशक येड है

كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعِيْكُمْ مَّشْكُورًا ۲۸ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ

तुम्हारा धवाब, और तुम्हारी मडनत मकभूल डूई (२२) भेशक डभने उतारा तुम पर कुरआनको

تَنْزِيْلًا ۲۹ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آيْتًا أَوْ كُفُورًا ۳۰ وَإِذْ كَرِ

बतदरीज (२३) तो ईन्तिज़ार रभो अपने रबके डुकमका, और न कडा मानो उनमेंसे किसी गुनडगार या नाशुकेका (२४) और याद करो

اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيْلًا ۳۱ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا

अपने रबके नामको सुब्बो शाम (२५) और कुछ रातमें उसका सजदा करो, और पाकी बोवो उसकी ज़्यादा

طَوِيْلًا ۳۲ إِنَّ هُوَ الَّذِي يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذُرُّونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا

रात तक (२६) भेशक यह लोग पसन्द करते हैं जल्दीवाली दुन्याको, और छोड बैठे हैं अपने पीछे गिरां बार

تَقِيْلًا ۳۳ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذْ كَتَبْنَا بَيْنَ أَيْمَانِهِمْ

दिनको (२७) डभने पैदा करमाया उन्हें, और मजभूत किया उनके जोड बन्दको. और जभ भी याडते डभ बदल देते ईन जैसों

عَلَى الْقَائِلِ بِعَمْرٍاءَ الْاَلْفِ ۱۲

۱۲

تَبْدِيلًا ۱۸) إِنَّ هَذِهِ تَذَكُّرَةٌ ۱۹) فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۲۰) وَمَا

کو پھیل (۱۸) یہ ہے یہ تذکرہ (۱۹) جو چاہے اس نے اپنے رب کی طرف راہ کو (۲۰) اور تو

تَشَاءُ ۲۱) وَلَا إِلَهَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۲۲) إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۲۳) يُدْخِلُ

جو چاہے (۲۱) اور کوئی نہیں ہے سوائے اللہ کے (۲۲) اللہ نے علم والا حکیم والا ہے (۲۳) داخل

مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۲۴) وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۲۵)

جو چاہے (۲۴) اور ظالموں کے لیے تیار کر رہا ہے دہم والا عذاب (۲۵)

۶۹۷

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ ۷۷

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

سورہ ازل مرسلاوات مکیٰ ثبوتی نام سے ازلہ کے بڑا مہربان بھوننے والا آیات ۲۰ رکوع ۲

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۱) فَالْعَصْفِ عَصْفًا ۲) وَالشَّارِبِ شَرًّا ۳) فَالْفَرْقَتِ

کسم ہے اون کی جو اڑتی جاتی ہے (۱) اور اڑنے والی سمٹ (۲) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۳) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۳) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۳)

فَرَقًا ۴) فَالْمَلَقَاتِ ذِكْرًا ۵) عُدْرًا أَوْ ذُرًّا ۶) وَإِنَّمَا تُوْعَدُونَ لَوَاقِعًا ۷) قَادًا

جڑا کرنے والی شامیوں کی (۴) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۵) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۶) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۷) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۷)

النُّجُومِ طِبَسَاتٍ ۸) وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۹) وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتَتْ ۱۰) وَ

تاروں کی (۸) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۹) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۰) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۰)

إِذَا الرُّسُلُ أُقِتَتْ ۱۱) لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۱۲) لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۱۳) وَمَا أَدْرَاكَ

اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۱) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۲) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۳) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۳)

مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۱۴) وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۱۵) أَلَمْ هُمْ الْآوَّلِينَ ۱۶)

اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۴) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۵) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۶) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۶)

ثُمَّ تَتَّبِعُهُمُ الْآخَرِينَ ۱۷) كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۱۸) وَيَلْ يَوْمَئِذٍ

اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۷) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۸) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۸) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۸)

لِلْمُكَذِّبِينَ ۱۹) أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَرْهَمِينَ ۲۰) فَجَعَلْنَا فِي قَرَارِكُمْ كَيْنًا ۲۱)

اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۱۹) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۰) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۱) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۱)

إِلَىٰ قَدَرٍ مَعْلُومٍ ۲۲) فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَدِرُونَ ۲۳) وَيَلْ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۲۴)

اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۲) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۳) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۴) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۴)

وَكَلْتُمْ مَا لَكُمْ تَكْرًا ۲۵) وَإِنَّمَا تُوْعَدُونَ لَوَاقِعًا ۲۶) قَادًا

اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۵) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۶) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۶) اور کسم ہے پھل اڑانے والی اڑتیوں کی (۲۶)

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۚ أَحْيَاءَ وَأَمْواتًا ۚ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَمًا وَاسِيًّا

کیا نہی بنا یا ہم نے زمین کو سمیٹنے والی؟ (۲۲) زندوں اور مردوں کو (۲۳) اور کر دیا ہم نے اس میں پھاڑ ڈالنے والی

شَحِيحًا ۚ وَاسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ۚ وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ انْطَلِقُوا

تیزی سے، اور پیلایا ہم نے تم لوگوں کو مٹی پانی (۲۴) ڈھکی ہے اس دن جڑوانے والوں کی (۲۵) یہ لو

إِلَى مَا كُنْتُمْ بِمُكذِّبُونَ ۚ انْطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۚ

وہاں جاؤ جہاں تم نے کذب کیا (۲۶) انٹلیو آئی ظلیں کی تین شاخوں والی (۲۷)

لَا ظِلِّيلٌ وَلَا يَعْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۚ إِنَّهَا تَرْهَىٰ بِشَرِّهِ كَالْقَصْرِ ۚ كَانَتْ

بظلمت کی اور نہ ہی اللہ سے (۲۸) اس کی پستی بھاری بھاری کی طرح (۲۹) جیسا کہ

جَمَلَتْ صُفْرًا ۚ وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۚ

بھیڑی ہوئی (۳۰) اور کذب کرنے والوں کی (۳۱) یہ دن ہے اس کا کبھی نہ کہیں گے (۳۲)

وَلَا يُؤْذَنُ لَكُمْ فِيعَتِدِ رُونَ ۚ وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ هَذَا يَوْمٌ

اور نہ ہی اجازت دی جائے گی کہ بولیں (۳۳) ڈھکی ہے اس دن جڑوانے والوں کی (۳۴) یہ دن ہے کھینچنے کا

الْفَصْلِ جَمْعَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ۚ وَيْلٌ

کی ٹکڑا کر دیا ہم نے تمہیں اور ان لوگوں کو (۳۵) تو اگر ہو تو مڈھار کوئی ڈانٹ، تو یہاں لو جڑوانے والوں کی (۳۶) ڈھکی ہے

يَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ إِنَّ السَّاعِقِينَ فِي ظِلِّ دَعْوَانٍ وَقَوَاكِمَ مَائِشَةٍ قَوْنٍ

اس دن جڑوانے والوں کی (۳۷) بھشک اٹھانے سے ڈرنے والے ساقیوں اور یشموں میں ہیں (۳۸) اور مہوں میں جو چاہیں (۳۹)

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ الْمُحْسِنِينَ

کی کھاؤ اور پیو کراہت سے، کھاؤ اس کا جو کرتے تھے (۴۰) بھشک اسی طرح کھاؤ دے رہے ہیں اچھے لوگوں کو (۴۱)

وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ كُلُوا وَتَسْعَوْا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُمْجِرُونَ ۚ

ڈھکی ہے اس دن جڑوانے والوں کی (۴۲) کھاؤ اور کھڑو کھڑو دن، بھشک تم لوگ مچھلے ہو (۴۳)

وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْجِعُوا لَا يَرْجِعُونَ ۚ

ڈھکی ہے اس دن جڑوانے والوں کی (۴۴) اور جب کہنا دیا گیا کہ لو لو لو لو لو لو، تو نہ ہی جڑوانے والوں کی (۴۵)

وَيْلٌ لِّيَوْمِئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۚ

ڈھکی ہے اس دن جڑوانے والوں کی (۴۶) تو کس بات کو اس کے بعد مانیں گے؟ (۴۷)